आदि नक्षत्रों को उचित माना गया है- शरद्वसन्तयोः केचित् नवयज्ञं प्रचक्षते। यह भी कहा गया है कि वसन्त वेला में जौ आदि और शरद में व्रीहि आदि धान्यादि ग्रहण किए जा सकते हैं- यवैः वसन्ते यष्टव्यं व्रीहिभिः शरदीष्यतः। श्यामैर्वापि शरद्येव ग्रीष्मकाले च वैणुजैः। कात्यायन का मत है कि इस दौरान काले धान्य को नहीं लिया जाए लेकिन यह भी ज्ञेय है कि जहां जो उपलब्ध होता हो, उसको इस वासन्तिक यज्ञ के लिए उपयोग में लिया जा सकता है। होली के अवसर पर इसी कारण चने, जौ, गेहूं आदि को भूना जाता है।

होलक और उसका महत्व

वसन्त में पकने की अवस्था में आने वाला या अग्नि पर अधपका धान्य होलक कहा जाता है और इसी कारण यह पर्व होली या होरी कहा जाता है। शब्दार्थ मूलक ग्रन्थों का मत है कि घास-पूस

से जलाई गई आग में भूनकर पकाए गए धान्य होलक होते है- तृणाग्नि भ्रष्टार्थ पक्वशमो धान्य होलकः। इसमें आए शमो धान्य का व्यावहारिक आशय है फली या कोष्ठकबद्ध अनाज। होलक का आयुर्वेदिक महत्व भाव प्रकाश निघण्टु में सिद्ध किया गया है कि ये अधपके होलक यदि खाए जाएं तो वात, पित्त, कफ और श्रमजन्य दोषों का हरण करते हैं- होलकोल्पानिलो मेदः कफ दोष श्रमापह।

ऋतुओं की सन्धियां पर्व या पौर कही जाती हैं। इसी कारण हमारे पर्वों का तिथियों के साथ सम्बन्ध रहा है। यह भी माना गया है कि इस सन्धि काल में रोग पैदा होते हैं- ऋतु सन्धिषु रोगा जायन्ते। ऐसे में रोगों के अचूक और सामूहिक मंगल कामना वाले उपाय के रूप में में भी यज्ञों की परम्परा रही है। होली हेमन्त और वसंत का योग है और उसके साथ यज्ञ की परम्परा का रूप आज भी ताजा चने और गेहूं को भूनकर होलक बनाकर बांटने और खाने की परिपाटी में देखा जा सकता है। लोग होली के दहन के अवसर पर चने की पूली या बालियों की ढेरी